



विश्व हिंदी समाचार

Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 18

अंक: 68

दिसंबर, 2024

संयुक्त राष्ट्र में हिंदी दिवस समारोह



22 नवम्बर, 2024 को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, न्यूयॉर्क में आयोजित हिंदी दिवस समारोह ने हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का एक अनोखा

अवसर प्रदान किया। इस अवसर पर भारत के संसद सदस्यों का प्रतिनिधि मंडल भी उपस्थित था। कार्यक्रम यू.एन. वेबटीवी पर लाइव प्रसारित हुआ और संयुक्त राष्ट्र, न्यूयॉर्क में भारत के स्थायी मिशन के सक्रिय सहयोग से संपन्न हुआ।

पृ. 2

दिल्ली में ठाकुर प्रसाद सिंह जन्मशती के उपलक्ष्य में संगोष्ठी



2 दिसंबर, 2024 को हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा ठाकुर प्रसाद सिंह की जन्मशती के उपलक्ष्य में एक संगोष्ठी का आयोजन एवं वृंदावनलाल वर्मा कृत

‘झांसी की रानी’ पुस्तक के नाट्य-रूपांतरण का लोकार्पण किया गया।

पृ. 6

न्यूयॉर्क में छठा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन



25-26 अक्टूबर, 2024 को न्यूयॉर्क के भारतीय दूतावास में हिंदी संगम फ़ाउंडेशन और भारतीय दूतावास, न्यूयॉर्क के संयुक्त प्रयास से छठा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। ‘हिंदी शिक्षण : पद्धति और प्रौद्योगिकी’ विषय पर सम्मेलन का उद्देश्य हिंदी को विदेशों में अधिग्रहण भाषा के रूप में सुदृढ़ करना तथा हिंदी शिक्षण में तकनीकी नवाचारों पर विचार-विमर्श करना था।

पृ. 9

नीदरलैंड में हिंदी काव्य-गोष्ठी



12 अक्टूबर, 2024 को लीवार्देन नगर, नीदरलैंड में दशहरा के अवसर पर हिंदी काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में भारत से वरिष्ठ कवि व शिक्षाविद् तथा राष्ट्रीय कवि संगम के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोक बत्रा उपस्थित थे।

पृ. 8

लंदन में ‘जाने-अनजाने पदचिह्न’ कविता-संग्रह का लोकार्पण



10 दिसंबर, 2024 को नेहरू सेंटर, लंदन में श्री मधुरेश मिश्रा की काव्य-पुस्तक ‘जाने-अनजाने पदचिह्न’ का लोकार्पण हुआ। ऊर्जावान कवि श्री

आशीष मिश्रा ने पुस्तक की पृष्ठभूमि और रचनाकार का परिचय देकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

पृ. 12

हिंदी में गगन गिल को ‘साहित्य अकादेमी पुरस्कार’



साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने हिंदी के लिए प्रतिष्ठित कवयित्री श्रीमती गगन गिल समेत, अंग्रेजी व 21 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को वर्ष 2024 का प्रतिष्ठित ‘साहित्य अकादेमी पुरस्कार’ देने की घोषणा 18 दिसंबर, 2024 को की। अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवास राव ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि श्रीमती गिल को उनके कविता-संग्रह ‘मैं जब तक आयी बाहर’ के लिए इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

पृ. 13

इस अंक में आगे पढ़ें :

- हिंदी दिवस 2024 पृ. 2-5
- संगोष्ठी, जयंती, सम्मेलन, कार्यशाला, हिंदी दिवस, हिंदी कक्षाएँ पृ. 5-10
- आभासी कार्यक्रम पृ. 10-11

- साक्षात्कार पृ. 11-12
- लोकार्पण पृ. 12-13
- सम्मान एवं पुरस्कार पृ. 13-15
- सूचना पृ. 15
- संपादकीय पृ. 16

हिंदी दिवस 2024

संयुक्त राष्ट्र में हिंदी दिवस समारोह



22 नवम्बर, 2024 को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, न्यूयॉर्क में आयोजित हिंदी दिवस समारोह ने हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का एक अनोखा अवसर प्रदान किया। इस अवसर पर भारत के संसद सदस्यों का प्रतिनिधि मंडल भी उपस्थित था। कार्यक्रम यू.एन. वेबटीवी पर लाइव प्रसारित हुआ और संयुक्त राष्ट्र, न्यूयॉर्क में भारत के स्थायी मिशन के सक्रिय सहयोग से संपन्न हुआ।



कार्यक्रम का उद्घाटन राजदूत पार्वतीनैनी हरिश ने स्वागत-भाषण से किया। उन्होंने कहा, 'हिंदी दिवस पर बोलना मेरे लिए गर्व की बात है। अंग्रेजी भाषा के अलावा हिंदी को भी आधिकारिक गणराज्य की भाषा के रूप में अपनाया गया है। यह दिन हमारे जीवन और राष्ट्र की भूमिका का उत्सव है। भारत बहुभाषी देश है, लेकिन सभी भाषाओं को जोड़ने वाली हिंदी एक सेतु का कार्य कर रही है।' उन्होंने रेखांकित किया कि भारत सरकार ने यूएन में स्वैच्छिक अनुदान देकर हिंदी समाचार-पत्र के निरंतर प्रसारण को सुनिश्चित किया है। इसके बाद श्री विरेन्द्र प्रसाद ने मंच संभालते हुए कहा कि आज हिंदी को वैश्विक स्तर पर जो मजबूती मिल रही है, उसमें विश्व के अन्य देशों और शिक्षाविदों

का योगदान भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने बेल्जियम के कामिल बुल्के के योगदान की सराहना की।



अंतरराष्ट्रीय भागीदारी के अंतर्गत मॉरीशस, नेपाल, श्रीलंका, फ़िजी और अन्य देशों के प्रतिनिधियों ने हिंदी भाषा और संस्कृति के महत्व पर अपने विचार साझा किए। मॉरीशस से माननीय जगदीश धर्मचंद कुंजल ने मॉरीशस में हिंदी शिक्षा, साहित्य और भारतीय संस्कृति का उल्लेख किया। उन्होंने मॉरीशस में हुए तीन विश्व हिंदी सम्मेलनों का भी उल्लेख किया और विश्व हिंदी सचिवालय के योगदान की सराहना की।



नेपाल के श्री लोक बहादुर थापा ने कहा कि नेपाल में एक लाख से अधिक लोग हिंदी भाषा को मातृभाषा के रूप में बोलते हैं और कई निजी स्कूलों व संस्थानों में हिंदी शिक्षा दी जा रही है। गयाना के डिप्टी परमानेंट प्रतिनिधि साला प्रसाद ने हिंदी सिनेमा और हिंदी शिक्षण में हिंदी के बढ़ते प्रभाव पर प्रकाश डाला। इसके अलावा सूरीनाम से वर्षा रामानंदन ने हिंदी-प्रचार संबंधी अपने अनुभव साझा किए। सांस्कृतिक कार्यक्रम में छात्रों और कलाकारों ने हिंदी कविता और संगीत का प्रदर्शन किया, जिससे हिंदी दिवस के उत्सव का स्वर और भी जीवंत बना।

साभार : WEBTV.UN.ORG/UNWEBTV-
"HINDI DIWAS/HINDI DAY 2024"/INDIA@
UNNEWYORK (X/TWITTER) - लाइव-स्ट्रीम
नोटिफिकेशन

ग्वांगज़ू, चीन में हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा के उपलक्ष्य में हिंदी की गतिविधियाँ



भारतीय महावाणिज्य दूतावास, ग्वांगज़ू ने 25 अक्टूबर, 2024 को हिंदी दिवस कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें कौंसुलेट अधिकारी और परिवार के सदस्य, भारतीय प्रवासी और भारत के मित्र शामिल हुए। कौंसल जनरल श्री शम्भू हक्की ने मुख्य भाषण दिया और दक्षिण चीन में हिंदी के प्रचार-प्रसार में कौंसुलेट द्वारा आयोजित गतिविधियों पर प्रकाश डाला। प्रतिभाशाली विदेशी कलाकारों और भारतीय प्रवासियों ने हिंदी दिवस समारोह में हिंदी गीतों और हिंदी कविताओं पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। सभी कलाकारों को श्री शम्भू हक्की द्वारा सम्मानित किया गया।

सितंबर 2024 में हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा के उपलक्ष्य में महावाणिज्य दूतावास द्वारा हिंदी की अनेक गतिविधियों का आयोजन हुआ, जिनमें हिंदी आइडल 2.0 गायन प्रतियोगिता, ऑनलाइन हिंदी निबन्ध लेखन एवं ऑनलाइन हिंदी भाषण प्रतियोगिताएँ, सोशल मीडिया अभियान 'हिंदी कविता-पठन' प्रतिस्पर्धा आदि रहे।

हिंदी दिवस कार्यक्रम के अंतर्गत 'हिंदी आइडल 2.0 गायन प्रतियोगिता' के अंतिम दौर का आयोजन हुआ तथा सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।



23 नवंबर, 2024 को दूतावास के तत्वावधान में शेन्जेन क्षेत्र में ओपन हाउस तथा कौंसलर कैम्प सहित 'इंट्रोडक्शन टू बेसिक हिंदी' निःशुल्क कार्यशाला आयोजित हुई। यह कार्यशाला 'पाठशाला' योजना (भारतीय संस्कृति और भाषाओं के पहलुओं पर कार्यशालाएँ) के तहत थी। उद्घाटन कौंसलर जनरल श्री शंभू हक्की ने किया और ग्वाडोंग यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज के एसोसिएट प्रोफ़ेसर (हिंदी), डॉ. विवेक मणि त्रिपाठी विशेषज्ञ रहे।

साभार : भारतीय महावाणिज्य दूतावास, ग्वांगज़ू की आधिकारिक वेबसाइट एवं फ़ेसबुक पेज

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस द्वारा 'हिंदी सप्ताह'



1 से 4 अक्टूबर, 2024 तक महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में हिंदी सप्ताह धूम-धाम से मनाया गया, जिसमें स्नातक, टी.डी. पी. व पी.जी.सी.ई. के विद्यार्थियों एवं छात्राध्यापकों ने विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया। 1 अक्टूबर को सुब्रमण्यम् भारती सभागार में हिंदी सप्ताह का शुभारंभ परंपरा अनुसार पौधे को जल अर्पित करके हुआ।

स्वरचित कविता-वाचन प्रतियोगिता

स्वरचित कविता-वाचन प्रतियोगिता में मुख्य अतिथि के रूप में श्री गंगाधरसिंह

सुखलाल उपस्थित रहे। निर्णायक मंडल में डॉ. संयुक्ता भुवन-रामसारा, डॉ. हेमराज सुंदर तथा डॉ. जयचंद लालबिहारी रहे। बी.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष की सिमरन धूजीत को प्रथम पुरस्कार, टी.डी.पी. की गायत्री कोलीचन को द्वितीय पुरस्कार तथा बी.ए. हिंदी प्रथम वर्ष के नन्कू महावीर गोसाईं को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। द्वितीय वर्ष की शिवानी दूलम, दीपिका नौबथ और पी.जी.सी.ई. के छात्र लविश सिंह रघुआ को सांत्वना-पुरस्कार प्राप्त हुआ। डॉ. कृष्ण कुमार झा, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, डॉ. संध्या कीनू तथा डॉ. विश्वानंद पतिया ने भी अपने काव्य-कौशल से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। संचालन डॉ. कृष्ण कुमार झा ने किया।

आशुवाक् प्रतियोगिता



2 अक्टूबर को विद्यार्थियों ने आशुवाक् प्रतियोगिता में भाग लिया। निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल ने महात्मा गांधी के मूल्यों पर बात की। भाषा संसाधन केंद्र की अध्यक्षा व वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. अलका धनपत, विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव डॉ. शुभंकर मिश्र तथा एम.बी.सी. से डॉ. शशि दुकन ने निर्णायक मंडल का कार्यभार संभाला। बी.ए. हिंदी तृतीय वर्ष की छात्रा मीनाक्षी दोमा को प्रथम पुरस्कार, द्वितीय वर्ष की शिवानी दूलम को द्वितीय पुरस्कार तथा रचना सीतल को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। द्वितीय वर्ष की सिमरन धूजीत और दीपिका नौबथ को क्रमशः चौथा और पाँचवा पुरस्कार प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता का संचालन हिंदी विभाग की वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. लक्ष्मी झमन ने किया।

नुक्कड़ नाटक



3 अक्टूबर को नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता सफलतापूर्वक आयोजित हुई। मुख्य अतिथि के रूप में विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। साहित्यकार श्री धनराज शम्भु, अनुसंधान केंद्र की अध्यक्षा व वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. राजरानी गोबिन तथा पूर्व छात्र एवं नाट्य-अभिनेता श्री राजेश्वर सितोहल निर्णायक मंडल के सदस्य रहे। बी.ए. हिंदी प्रथम वर्ष की टोली ने प्रथम पुरस्कार तथा बी.ए. हिंदी द्वितीय वर्ष की टोली ने द्वितीय पुरस्कार जीता। द्वितीय वर्ष के कृष्णरेन लचा ने श्रेष्ठ लेखक का पुरस्कार जीता। प्रथम वर्ष की रुद्राणी देवी महावीर को श्रेष्ठ अभिनेत्री तथा द्वितीय वर्ष की शिवानी दूलम को द्वितीय श्रेष्ठ अभिनेत्री पुरस्कार मिला। प्रतियोगिता का संचालन हिंदी पीठ प्रो. राज शेखर ने किया।

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

4 अक्टूबर को अंत्याक्षरी संगीत-कक्ष में आयोजित हुई। मुख्य अतिथि के रूप में आयुष पीठ प्रो. ईश शर्मा ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। निर्णायक मंडल में प्रो. ईश शर्मा, पाठ्यक्रम विकास के अध्यक्ष व वरिष्ठ व्याख्याता श्री विशाल मंगरू, मॉरीशस व क्षेत्रीय अध्ययन संकाय के श्री जयगणेश दाओसिंह, श्रीमती अनीशा बादल कोसी और श्रीमती हेल्विना निरंजन रहे। 'देसी कुड़ी' टोली प्रथम स्थान पर, 'जुबैदा' टोली द्वितीय स्थान पर तथा 'धूम 3' टोली तृतीय स्थान पर आई।

पोस्टर प्रतियोगिता



‘मातृभूमि’ शीर्षक पर आधारित पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रतियोगिता का उद्देश्य था युवा-पीढ़ी में हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना जगाना। प्रथम विजेता पी.जी.सी.ई. की छात्रा मानसी दोयल रही, द्वितीय विजेता बी.ए. तृतीय वर्ष की प्रियंका परभू तथा तृतीय विजेता बी.ए. प्रथम वर्ष की जानवी नन्हक रही। द्वितीय वर्ष की तीश्मा जल्लु और शिवानी दूलम को सांत्वना-पुरस्कार प्राप्त हुए।

श्रुतलेख प्रतियोगिता

30 सितंबर, 2024 को श्रुतलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, जिसमें बी.ए. प्रथम वर्ष से नन्कू महावीर गोसाईं प्रथम विजेता घोषित हुआ। द्वितीय वर्ष की संजना जड्डू तथा गणेश प्रियंका को क्रमशः द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। डॉ. तनुजा पदारथ-बिहारी श्रुतलेख की संयोजिका रहीं।

साभार : ‘युवाज’ - युवा हिंदी की आवाज, अंक 11 -

अक्टूबर 2024

न्यूजीलैंड में ‘हिंदी भाषा सप्ताह’

न्यूजीलैंड में 21 से 25 अक्टूबर, 2024 तक हिंदी लैंग्वेज एंड कल्चर ट्रस्ट ऑफ न्यू जीलैंड द्वारा ‘हिंदी भाषा सप्ताह’ का आयोजन हुआ। इस आयोजन के तहत ऑनलाइन माध्यम से अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें भाषण, कार्यशाला, कविता-पाठ, वाद-विवाद प्रतियोगिता, कहानी-कथन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ शामिल थीं। छात्रों ने ‘मेरी मातृभाषा - मेरी पहचान’ विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए, जिससे

मातृभाषा के प्रति गर्व और आत्मीयता की भावना प्रकट हुई। उत्सव का उद्घाटन हिंदी भाषा के वैश्विक महत्त्व पर आधारित एक परिचर्चा से हुआ। सप्ताह के मध्य में आयोजित ‘हिंदी कहानी दिवस’ और ‘संस्कृति संध्या’ ने सभी का मन मोह लिया।

साभार : हिंदी लैंग्वेज एंड कल्चर ट्रस्ट ऑफ न्यू जीलैंड का फ़ेसबुक पेज

बीजिंग में हिंदी दिवस



भारतीय दूतावास, बीजिंग ने 23 दिसंबर, 2024 को विश्व हिंदी दिवस 2025 की पूर्व संध्या पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम की प्रमुख गतिविधियों में कहानी-लेखन और भाषण प्रतियोगिताएँ थीं। प्रतिभागियों ने हिंदी में अपनी मौलिक रचनाएँ प्रस्तुत कीं और विविध विषयों पर भाषण दिए, जिनमें भाषा की शुद्धता, प्रवाह और अभिव्यक्ति की सुंदरता झलकी। सांस्कृतिक सत्र के अंतर्गत बीजिंग विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय के छात्रों ने कविताएँ प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम में भारत के राजदूत श्री प्रदीप कुमार रावत ने उद्घाटन-भाषण देते हुए हिंदी भाषा के अंतरराष्ट्रीय प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया। सिंगुआ विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण-पत्र और पुरस्कार प्रदान किए गए।

साभार : GLOBAL TIMES, INDIA : WORLD HINDI DAY 2025 OBSERVED IN BEIJING THROUGH STORY WRITING AND SPEECH COMPETITIONS

दक्षिण अफ्रीका में हिंदी दिवस



2 दिसंबर, 2024 को जोहान्सबर्ग में भारतीय उच्चायोग द्वारा हिंदी दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उच्चायोग के प्रमुख अधिकारी के स्वागत-भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत और अंतरराष्ट्रीय संवाद का पुल भी है। इस अवसर पर हिंदी स्कूलों के बच्चों ने परंपरागत और आधुनिक विषयों पर कविता-पाठ किया। कार्यक्रम में एक संवादात्मक सेमिनार सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें हिंदी के वैश्विक प्रसार में हिंदी शिक्षण और साहित्य के योगदान पर चर्चा हुई। प्रतिभागियों ने अपने प्रश्न और अनुभव साझा किए, जिससे सत्र ज्ञानवर्धक और इंटरैक्टिव बना।

साभार : भारतीय उच्चायोग, प्रिटोरिया का फ़ेसबुक पेज

त्रिनिदाद और टोबेगो में हिंदी दिवस

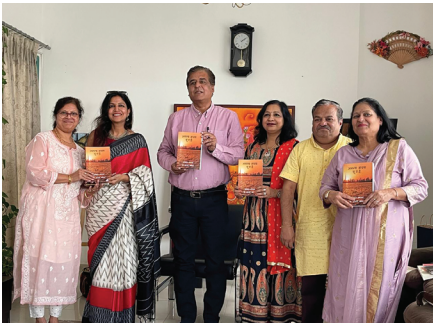


8 अक्टूबर, 2024 को महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट फ़ॉर कल्चरल को-ऑपरेशन, त्रिनिदाद और टोबेगो में हिंदी दिवस

मनाया गया। इसमें त्रिनिदाद और टोबेगो के हिंदी प्रेमी, छात्र, शिक्षक और भारतीय उच्चायोग के अधिकारी शामिल हुए। इस अवसर पर भारत के माननीय गृह मंत्री, श्री अमित शाह का संदेश वीडियो मैसेज के जरिए चलाया गया। भारतीय उच्चायोग द्वारा आयोजित अलग-अलग प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। हिंदी निधि के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम, सेंटर फॉर मेडिकल साइंसेज एजुकेशन के हेड एवं यूनिवर्सिटी ऑफ द वेस्ट इंडीज के डिप्टी डीन क्यू.ए.ए. प्रोफेसर विद्याधर सा तथा भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम डॉ. प्रदीप राजपुरोहित भी उपस्थित थे।

साभार : महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट फॉर कल्चरल को-ऑपरेशन का फेसबुक पेज

संगोष्ठी, जयंती, सम्मेलन, कार्यशाला, हिंदी दिवस, हिंदी कक्षाएँ दुबई में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी



15 दिसंबर, 2024 को यू.ए.ई. में प्रसिद्ध साहित्यालोचक, फ़िल्म समीक्षक व साहित्यकार डॉ. संदीप अवस्थी के सान्निध्य में एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम श्रीमती अंजु मेहता के कलात्मक निवास-स्थल पर सम्पन्न हुआ, जिसमें शारजाह, दुबई व अबू धाबी से यू.ए.ई. के साहित्यकार एकत्र हुए। मुख्य अतिथि के हाथों यू.ए.ई. वासियों की नई पुस्तक 'अनन्य संचय यू.ए.ई.' का विमोचन हुआ। प्रवासी साहित्य की खूबियों, उसके मर्म व मुख्यधारा से उसके जुड़ाव-कटाव की चर्चाएँ हुईं। डॉ.

संदीप अवस्थी ने डॉ. आरती लोकेश के उपन्यास 'कारागार' पर विस्तृत चर्चा की। डॉ. लोकेश के कहानी-संग्रह 'फ़िबोनाची वितान', पुस्तक 'सात स्मृंदर पार' तथा यात्रा-संग्रह 'झरोखे' पर चर्चा हुई। पुस्तक-चर्चा में मीरा जी की 'धूप-छाँव की दरी', नितीन जी की 'गाफ़ के साए में' तथा 'मदार के बीज' भी शामिल थे। अंजु मेहता, निधि दवे, निशा गिरि तथा नूपुर दुबे ने प्रवासी साहित्य पर प्रकाश डाला। डॉ. अवस्थी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में प्रवासी साहित्य पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता पर बल दिया।

साभार : डॉ. आरती लोकेश 'गोयल' का फेसबुक पेज

बिहार में 'स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

28-29 अक्टूबर, 2024 को हिंदी विभाग, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा एवं भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में सत्तपण्णी सभागार, आचार्य नागार्जुन संकाय भवन में 'स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी पत्रकारिता' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी के अंतर्गत प्रथम ऑनलाइन अकादमिक सत्र का विषय 'स्वाधीनता आंदोलन एवं हिंदी पत्रकारिता के विविध आयाम' रखा गया था। सत्राध्यक्ष डॉ. विवेक मणि त्रिपाठी, सह-आचार्य (हिंदी), क्वांगतोग विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, चीन तथा सह-सत्राध्यक्ष डॉ. ऋतु शर्मा, अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन, शाखा नीदरलैंड रहीं। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, राजीव गांधी विश्वविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश तथा काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी से शोधकर्ताओं ने इस सत्र में अपने-अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन श्री कुमार मंगलम्, शोधार्थी, हिंदी विभाग, पाटलिपुत्र

विश्वविद्यालय, पटना ने किया। सत्र-रिपोर्टर का कार्य श्री रोहित सिंह, शोधार्थी, बौद्ध अध्ययन विभाग, नव नालन्दा महाविहार, नालन्दा ने संभाला।

साभार : डॉ. ऋतु नरन पांडे का फेसबुक पेज

पटना में महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती पर राष्ट्रभाषा-संगोष्ठी



2 अक्टूबर, 2024 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना में महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती पर राष्ट्रभाषा-संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि संविधान बनने तक यदि महात्मा गांधी जीवित रहते, तो भारतीय संविधान का स्वरूप कुछ और ही रहता। संविधान-सभा की प्रथम बैठक में 'हिंदी' भारत की राष्ट्रभाषा घोषित हुई होती। गांधी जी ने हिंदी को 'देश की राष्ट्रभाषा' मानकर अखंडित भारतवर्ष में इसके महत्त्व को समझाया। उन्होंने अहिंदी भाषी प्रदेशों में हिंदी-प्रचार की अनेक संस्थाएँ स्थापित कीं। महाराष्ट्र के वर्धा में, जहाँ उनका आश्रम भी था, उन्होंने 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की स्थापना की थी, जो आज भी चिरंजीवी और गतिमान संस्था है।

उन्होंने शास्त्री जी को गांधी जी का सच्चा अनुयायी तथा भारत का सबसे अच्छा 'लाल' बताया। वे भारत के द्वितीय किंतु 'अद्वितीय' प्रधानमंत्री थे।

बिहार सरकार में विशेष सचिव रहे सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. उपेंद्रनाथ पाण्डेय ने कहा कि गांधी अपने उत्तम विचारों के कारण विश्व के महान् व्यक्तियों में गिने जाते हैं। सम्मेलन के उपाध्यक्ष डॉ. शंकर

प्रसाद ने महात्मा गांधी की आत्मकथा के अंशों को उद्धृत कर उनके जीवन-संघर्ष की विस्तारपूर्वक चर्चा की। डॉ. मधु वर्मा, प्रो. रत्नेश्वर सिंह, डॉ. ध्रुव कुमार, डॉ. ओम् प्रकाश पाण्डेय, डॉ. मेहता नगेंद्र सिंह, प्रो. सुशील कुमार झा, डॉ. मनोज गोवर्द्धनपुरी आदि वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर देश की दोनों महान् विभूतियों के चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट

ठाकुर प्रसाद सिंह जन्मशती के उपलक्ष्य में संगोष्ठी



2 दिसंबर, 2024 को हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा ठाकुर प्रसाद सिंह की जन्मशती के उपलक्ष्य में एक संगोष्ठी का आयोजन एवं वृंदावनलाल वर्मा कृत 'झांसी की रानी' पुस्तक के नाट्य-रूपांतरण का लोकार्पण किया गया।

हिंदी अकादमी के सचिव, श्री संजय कुमार गर्ग ने कहा, अकादमी उन साहित्यकारों को सामने लाने का प्रयास कर रही है, जो समय की आंधी में कहीं खो गए हैं।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री विजय किशोर मानव ने कहा कि ठाकुर प्रसाद सिंह जीवन के कवि हैं, उनमें बेचैनी थी, वे कुछ अलग हटकर करना चाहते थे। उन्होंने मनुष्य, प्रकृति और स्त्री पर गीत लिखे हैं। विशिष्ट अतिथि श्री उमेश प्रसाद सिंह ने उनके शिष्य होने के नाते अपने कुछ संस्मरण साझा किए। श्री राजेंद्र गौतम ने कहा वंशी और मादल की रचना करके वे अमर हो

गए। डॉ. अरविंद त्रिपाठी ने कहा उनकी रचनाएँ कालजयी हैं। श्री राधे श्याम बंधु ने उन्हें बहुमुखी प्रतिभा का साहित्यकार बताया। डॉ. सुशील द्विवेदी ने उल्लेख किया कि उन्होंने कभी कलम के साथ समझौता नहीं किया। हिंदी अकादमी के उपसचिव श्री ऋषि कुमार शर्मा ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

इस अवसर पर हिंदी अकादमी द्वारा वृंदावनलाल वर्मा कृत सुरेंद्र शर्मा द्वारा मंचित नाटक 'झांसी की रानी' के नाट्य-रूपांतर पर एक पुस्तक का लोकार्पण किया गया।

आभार : वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कृष्णा सोबती जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी



19-20 दिसंबर, 2024 को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा कृष्णा सोबती जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 19 दिसंबर, 2024 को उद्घाटन-सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने की। आरंभिक वक्तव्य एवं समापन-वक्तव्य साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा द्वारा दिया गया।

साहित्य अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवासराव ने स्वागत-वक्तव्य में कहा कि कृष्णा सोबती की सबसे बड़ी पहचान उनकी जीवंत भाषा थी। श्री गिरधर राठी ने बीज-वक्तव्य देते हुए कहा कि सोबती जी

अपनी आलोचना को गंभीरता से लेती थीं और उसका जवाब सतर्कता से देती थीं। उन्होंने हमेशा अपने पाठकों की परवाह की और उन्हें सबसे ज्यादा महत्त्व दिया।

प्रथम सत्र 'जिंदगीनामा के पुनर्पाठ' पर आधारित था, जो मृदुला गर्ग की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ और इसमें पॉल कौर (पंजाबी), शाफ़े किदवई (उर्दू) एवं सुकृता पॉल कुमार (अंग्रेज़ी) ने अपने विचार रखे।



समापन-दिवस पर 'कृष्णा सोबती का कथा साहित्य' विषयक सत्र गोपेश्वर सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें निधि अग्रवाल, सुधांशु गुप्त एवं सुनीता ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'कृष्णा सोबती का साहित्य और स्त्री-विमर्श' विषयक सत्र क्षमा शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। सुनीता जी ने उनकी कहानियों की बात की। गोपेश्वर सिंह ने कहा कि उनकी हर रचना ने पाठकों और आलोचकों को आकर्षित किया। उपासना ने कहा कि उनके स्त्री-विमर्श में विद्रोह और जीवन के प्रति उल्लास शामिल है। अल्पना मिश्र ने 'सिक्का बदल गया', 'बहनें' और 'ऐ लड़की' को विशेष रूप से संदर्भित करते हुए सोबती जी के लेखन में स्त्री-विमर्श के स्वरूप को रेखांकित किया। सविता सिंह ने विचार प्रकट किया कि उनका टेक्स्ट उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। लेखिका क्षमा शर्मा ने उनके साथ बिताए अंतरंग संस्मरणों को साझा किया। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के उपसचिव श्री देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

साभार : राष्ट्रीय हिंदी दैनिक अमर भारती / दैनिक जागरण

नैनीताल में हिंदी कथाकार शिवानी की जन्मशताब्दी पर संगोष्ठी



8 नवंबर, 2024 को हिंदी कथाकार शिवानी की जन्मशताब्दी के अवसर पर कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड की महादेवी वर्मा सृजन पीठ और साहित्य अकादेमी, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी का विषय था 'शिवानी का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प', जिसमें वरिष्ठ साहित्यकारों और शिक्षाविदों ने शिवानी के लेखन और उनके सामाजिक-सांस्कृतिक योगदान पर विस्तार से चर्चा की। मुख्य वक्ता वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. दिवा भट्ट ने कहा कि शिवानी की रचनाएँ भारतीय समाज के घरेलू और कामकाजी महिलाओं के जीवन की अनकही सच्चाइयों का बेबाक चित्रण करती हैं। कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दीवान सिंह रावत ने संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए उल्लेख किया कि हिंदी साहित्य में पढ़ने-लिखने की परंपरा को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। प्रो. देव सिंह पोखरिया ने रेखांकित किया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय समाज की समस्याएँ, विशेषकर महिला संबंधी मुद्दे, शिवानी की रचनाओं में प्रमुखता से आए हैं।

साभार : शाह टाइम्स संवादाता

तकनीकी हिंदी संगोष्ठियों का आयोजन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जोधपुर और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, इंदौर ने 2 और 3 दिसंबर, 2024 को संयुक्त रूप से तकनीकी हिंदी संगोष्ठी 2024 का

आयोजन किया। इस आयोजन का विषय 'विकसित भारत की दिशा में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का योगदान' था। यह संगोष्ठी जोधपुर परिसर में आयोजित की गई और इसमें देशभर से तकनीकी विशेषज्ञ, शोधकर्ता, कवि और स्कूली छात्र बड़ी संख्या में शामिल हुए।

संगोष्ठी का उद्घाटन दोनों संस्थानों के निदेशकों द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन-भाषण में उन्होंने बताया कि संगोष्ठी का उद्देश्य हिंदी भाषा को तकनीकी और नवाचार के माध्यम के रूप में प्रस्तुत करना था। कार्यक्रम में स्कूली छात्रों के लिए 'विज्ञान किरण' नामक एक विशेष सत्र आयोजित हुआ, जिसमें जोधपुर के विभिन्न विद्यालयों से आए 700 से अधिक छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। मुख्य अतिथि श्री अनिल जोशी, पूर्व उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान और अध्यक्ष, वैश्विक हिंदी परिवार ने इस संगोष्ठी को हिंदी भाषा और विज्ञान के आपसी संबंधों को गहरा करने की दिशा में एक उत्कृष्ट पहल बताया। ऑनलाइन सत्र में श्री बालेंदु शर्मा दाधीच, निदेशक, स्थानीय भाषाएँ और सुगम्यता, माइक्रोसॉफ्ट ने हिंदी में तकनीकी टूल्स के उपयोग के बारे में जानकारी दी। संगोष्ठी में शामिल विशेषज्ञों ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के तहत काव्य-संध्या रखी गई, जिसमें 'कविता भारती संग्रह' का विमोचन हुआ। इस कार्यक्रम में श्री आकाश नौरंगी, डॉ. विवेक विजय, डॉ. राजेश कुमार और श्री शुभम पांडे 'मुक्त' आदि कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से विज्ञान, प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा के महत्त्व को रेखांकित किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन राजभाषा हिंदी के तकनीकी प्रचार पर एक पैनल चर्चा का आयोजन हुआ। इसमें संगोष्ठी आयोजनकर्ताओं और विशेषज्ञों ने संगोष्ठी के भावी विस्तार की चर्चा की। इसके

साथ ही, एक राजभाषा कार्यशाला का भी आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. शैलेश त्रिपाठी, राजभाषा प्रबंधक, ऑइल इंडिया लिमिटेड, ने सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रभावी उपयोग पर जानकारी दी।

आयोजन सचिव डॉ. नितिन भाटिया, राजभाषा अधिकारी के धन्यवाद-ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

साभार : हिन्दुस्थान समाचार / सतीश - LIVEVNS. NEWS

दिनांक 20-21 नवंबर, 2024 को एरीज़, नैनीताल के नोडल मंत्रालय विज्ञान और प्रौद्योगिकी, भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारी श्री अरुण कंसल के नेतृत्व में 2 दिवसीय अखिल भारतीय वैज्ञानिक और तकनीकी राजभाषा संगोष्ठी हुई। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के उपनिदेशक डॉ. छबिल कुमार मेहेर व वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रसिद्ध विज्ञान संचारक डॉ. चंद्र मोहन नौटियाल ने हिंदी में विज्ञान को प्रचारित करने पर जोर दिया। नराकास, हल्द्वानी के सचिव श्री प्रवीण शर्मा ने हिंदी की गतिविधियों के बारे में बताया। एरीज़ के वरिष्ठ इंजीनियर श्री मोहित जोशी ने संगोष्ठी का संचालन किया। इसमें डीएसटी, भारत सरकार के विभिन्न प्रदेशों; गुजरात, महाराष्ट्र, केरल, असम, पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड व कर्नाटक में स्थित विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों के 50 वैज्ञानिक, इंजीनियर व शोध-पार्षद शामिल हुए।

साभार : आर्यभट्ट रिसर्च इन्स्टीट्यूट ऑफ़ ऑब्जर्वेशनल साइंस, नैनीताल का फ़ेसबुक पेज



3 अक्टूबर, 2024 को उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (NESAC), भारत सरकार,

अंतरिक्ष विभाग, उमियम, शिलांग, मेघालय में 'अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का सतत विकास में अनुप्रयोग' विषय पर हिंदी तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, उत्तर पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र के निदेशक डॉ. विनय कुमार मिश्रा रहे। मंच पर डॉ. शंकर कुमार, संयुक्त निदेशक (राजभाषा), अंतरिक्ष विभाग शाखा सचिवालय उपस्थित थे। श्री कुमार आनंद, प्रशासनिक अधिकारी ने सचिव अंतरिक्ष विभाग, डॉ. एस सोमनाथ का शुभसंदेश पढ़ा। डॉ. विनय कुमार मिश्रा ने सभी प्रतिभागियों को संबोधित किया। डॉ. एस. पी. अग्रवाल, निदेशक एनईसैक ने संगोष्ठी के आयोजन का उद्देश्य तकनीकी संचार में भाषाई समावेशिता को बढ़ावा देना बताया। संगोष्ठी में दो तकनीकी सत्रों में कुल 13 लेख प्रस्तुत हुए। निदेशक एनईसैक द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए।

साभार : उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, भारत सरकार,
अंतरिक्ष विभाग, उमियम, शिलांग, मेघालय की
औपचारिक वेबसाइट

आई.आई.एम. मुंबई में हिंदी कार्यशालाओं ने बढ़ाया भाषा का प्रभाव

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIM), मुंबई में 17 अक्टूबर, 2024 को वर्ष 2024 के दौरान वार्षिक हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य रूप से आधिकारिक भाषा-नीति, हिंदी व्याकरण और भाषा-कौशल तथा आधिकारिक पत्राचार पर गहन चर्चा हुई। प्रतिभागियों ने हिंदी में शुद्ध लेखन, व्याकरण-सुधार, प्रभावी अभिव्यक्ति और सरकारी एवं संस्थागत पत्राचार की तकनीकें सीखीं। विशेषकर नोट, पत्र और रिपोर्ट तैयार करने के व्यावहारिक प्रशिक्षण ने उपस्थित अधिकारियों को दैनिक कार्यों में हिंदी का प्रभावी उपयोग करने में सक्षम बनाया। यह

कार्यशाला हिंदी को एक सशक्त संचार माध्यम के रूप में स्थापित करने और इसके प्रयोग को प्रोत्साहित करने में उपयोगी सिद्ध हुई।

स्रोत: IIM मुंबई, वार्षिक हिंदी कार्यशाला रिपोर्ट 2024

लंदन में 'एक शाम - एक लेखक के नाम' गोष्ठी



23 दिसंबर, 2024 को कथा यूके एवं एशियन कम्यूनिटी आर्ट्स ने ज़किया जुबैरी के निवास पर 'एक शाम - लेखक के नाम' का आयोजन किया। मुख्य अतिथि पटना से चर्चित कहानीकार एवं कवयित्री रूबी भूषण रहीं, जिन्होंने कहा कि कहानी सफल तभी होती है, जब कथानक, संवाद, चरित्र आदि तत्वों के प्रयोग द्वारा उसे सजाया-सँवारा जाता है। उनके अनुसार सुप्रतिष्ठित कथाकार तेजेंद्र शर्मा की 'ज़मीन भुरभुरी क्यों', 'कब्र का मुनाफ़ा' और 'काला सागर' जैसी कहानियों के द्वारा समकालीन कहानी की त्वरा को समझा जा सकता है।

रूबी भूषण ने अपनी कहानी 'मैं नरेश शुक्ला की बेटी नहीं हो सकती' का अंश-पाठ भी किया, जिसपर सारगर्भित चर्चा हुई और सबने उसे एक उत्कृष्ट कहानी माना। कार्यक्रम में प्रदीप गुप्ता, तिथि दानी, आशुतोष कुमार और विनीत जौहरी ने रचना-पाठ किया। पूनम देव ने गज़ल गायकी से शाम में एक नया रंग भर दिया। समापन से पहले रूबी भूषण ने भी अपनी शायरी का परिचय दिया।

साभार : श्री तेजेंद्र शर्मा का फ़ेसबुक पेज

नीदरलैंड में हिंदी काव्य-गोष्ठी



12 अक्टूबर, 2024 को लीवार्देन नगर, नीदरलैंड में दशहरा के अवसर पर एक हिंदी काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में भारत से वरिष्ठ कवि व शिक्षाविद् तथा राष्ट्रीय कवि संगम के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोक बत्रा उपस्थित थे। नीदरलैंड व भारत के कवियों ने कविता-पाठ द्वारा कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का आयोजन नीदरलैंड निवासी कवि इंद्रेश कुमार व सुयश द्वारा किया गया। डॉ. रामा तक्षक, श्री विश्वास दूबे, डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडे, डॉ. दिनेश ननन पांडे सहित अन्य भारतीय व सूरीनामी प्रवासी भारतीय उपस्थित रहे।

नीदरलैंड की सामाजिक संस्था 'मैत्री' व अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन नीदरलैंड द्वारा डॉ. अशोक बत्रा को हिंदी भाषा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए 'प्रशस्ति-पत्र' प्रदान किया गया।

साभार : गुड़गाँव टुडे, गुरुग्राम

सांटियागो में हिंदी कविता-पाठ



सांटियागो स्थित भारतीय दूतावास ने नवम्बर 2024 में स्थानीय साहित्यिक कार्यक्रम के अंतर्गत हिंदी कविता-

पाठ का आयोजन किया। कार्यक्रम का संचालन भारतीय दूतावास, सांटियागो ने किया, जिसमें स्थानीय विश्वविद्यालयों और साहित्यिक समूहों ने सहयोग दिया। कार्यक्रम में कविता-पठन, अनुवाद-पाठ और सांस्कृतिक संवाद शामिल थे। उपस्थित प्रतिभागियों को हिंदी कविता और अनुवाद के माध्यम से भारतीय साहित्य से परिचित होने का अवसर मिला। यह सुझाव दिया गया कि भविष्य में इस तरह के कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाने चाहिए। इससे हिंदी साहित्य की पहुँच और प्रभाव बढ़ेगा।

साभार : भारतीय दूतावास, सांटियागो, चिली का फ़ेसबुक पेज

न्यूयॉर्क में छठा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन



25-26 अक्टूबर, 2024 को न्यूयॉर्क के भारतीय दूतावास में छठा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। इसका आयोजन हिंदी संगम फ़ाउंडेशन (न्यू जर्सी आधारित गैर-लाभकारी संस्था) और भारतीय दूतावास, न्यूयॉर्क के संयुक्त प्रयास से हुआ। सम्मेलन का उद्देश्य हिंदी को विदेशों में अधिग्रहण भाषा के रूप में सुदृढ़ करना तथा हिंदी शिक्षण में तकनीकी नवाचारों पर विचार-विमर्श करना था। सम्मेलन का विषय था - 'हिंदी शिक्षण : पद्धति और प्रौद्योगिकी'।

सहयोगी संस्थाओं में न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय, मध्य-पूर्व और इस्लामिक अध्ययन विभाग, मिशिगन राज्य विश्वविद्यालय, दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग, कोलंबिया विश्वविद्यालय, युवा हिंदी संस्थान, शिक्षायातन सांस्कृतिक केंद्र और अखिल विश्व हिंदी समिति शामिल थीं। सम्मेलन के सलाहकार न्यूयॉर्क के महावाणिज्यदूत माननीय बिनया एस. प्रधान रहे।



सम्मेलन के पहले सत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल शिक्षण उपकरण तथा खुले शैक्षिक संसाधनों के उपयोग पर चर्चा हुई। दूसरे सत्र में विदेशों में हिंदी के सांस्कृतिक प्रभाव और भाषा-संरचना पर पैनल चर्चा आयोजित की गई। तीसरे सत्र में शिक्षकों के लिए डिज़ाइन किए गए डिजिटल उपकरण और संसाधनों का प्रदर्शन किया गया। चौथे सत्र में हिंदी शिक्षण के पारंपरिक और समकालीन दृष्टिकोण पर विचार किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में प्रयोग रंगमंच समूह, न्यू जर्सी द्वारा हिंदी नाटक प्रस्तुत किया गया और कवि-सभा का आयोजन हुआ। सम्मेलन के प्रमुख वक्ताओं में डॉ. राकेश रंजन, कोलंबिया विश्वविद्यालय, प्रोफ़ेसर गैब्रिएला निक इलिएवा, न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय और अन्य शोधकर्ता एवं शिक्षक उपस्थित थे। सम्मेलन ने यह स्पष्ट किया कि ए.आई. और ओ.ई.आर. जैसे डिजिटल संसाधनों को हिंदी-शिक्षण में शामिल करना विदेशी संदर्भों में विशेष रूप से उपयोगी है।

साभार : दक्षिण एशियाई भाषा शिक्षक संघ, न्यूयॉर्क की आधिकारिक वेबसाइट

पुर्तगाल में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

पुर्तगाल के लिस्बन विश्वविद्यालय में हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ाए जाने के 15 वर्ष पूरे होने पर 28-29 नवंबर, 2024 को 'बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भों में हिंदी शिक्षण' पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। यह सम्मेलन लिस्बन विश्वविद्यालय के भारतीय अध्ययन केंद्र और भाषा-विज्ञान केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय दूतावास, लिस्बन के सहयोग से हुआ। यूरोप में हिंदी प्रायः वयस्कों को पढ़ाई जाती है और इसका उद्देश्य कार्यस्थल व सामाजिक जीवन में व्यावहारिक उपयोग करना सिखाना है। सम्मेलन में हिंदी-शिक्षण के विविध पहलुओं जैसे विरासत और विदेशी भाषा के रूप में हिंदी का अर्जन, हिंदी व्याकरण, तुलनात्मक भाषा-विज्ञान, अनुवाद, भाषा-नीतियाँ, डिजिटल संसाधन, आभासी शिक्षण, द्विभाषिकता, भाषा और संस्कृति का संयुक्त शिक्षण और हिंदी की कक्षा में आई.सी.टी. संसाधनों के प्रयोग पर चर्चा हुई। यह आयोजन हिंदी-शिक्षण में नवीन दृष्टिकोण तथा श्रेष्ठ पद्धतियों और संसाधनों के प्रयोग को प्रोत्साहित करते हुए हिंदी को एक सजीव, समावेशी और विश्व-संवादी भाषा के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम रहा।

साभार : लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल की आधिकारिक वेबसाइट

दुबई में ताहबिब महोत्सव 2024 में हिंदी कवि-सम्मेलन



1-3 दिसंबर, 2024 को अल सफ़ा आर्ट एंड डिज़ाइन लाइब्रेरी, दुबई में आयोजित

ताहबिब महोत्सव 2024 के तीन दिवसीय कार्यक्रम में हिंदी कवि-सम्मेलन संपन्न हुआ। श्री जावेद अख्तर ने हिंदी साहित्य की महत्ता और इसकी वैश्विक भूमिका पर प्रकाश डाला। साहित्यिक चर्चा हुई, जिसमें हिंदी साहित्य की वर्तमान स्थिति, नवसृजन की चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा पर विचार-विमर्श किया गया। ताहबिब महोत्सव की आयोजक समिति ने सभी पहलुओं का उत्कृष्ट प्रबंधन किया और हिंदी काव्य एवं साहित्य के पारंपरिक व समकालीन आयामों को संतुलित रूप में प्रस्तुत किया।

साभार : [HTTPS://YOUTU.BE/TW38VZXSJRG](https://youtu.be/TW38VZXSJRG)

उत्तराखंड में 'लेखक गाँव'

25 से 27 अक्टूबर, 2024 को स्पर्श हिमालय फ़ाउंडेशन के तत्वावधान में देहरादून के थानो में स्थित लेखक गाँव में अंतरराष्ट्रीय कला, साहित्य और संस्कृति महोत्सव का आयोजन किया गया। इस पाँच दिवसीय महोत्सव में 65 से अधिक देशों के साहित्यकारों, लेखकों और कलाकारों ने भाग लिया। 'लेखक गाँव' लेखकों और रचनाकर्मियों द्वारा महसूस की जा रही व्यावहारिक कठिनाइयों का निवारण करने की ओर एक अभिनव पहल है। उत्तराखंड में यह पहला लेखक गाँव भविष्य का पर्यटक गंतव्य बनकर उभरेगा। यह मंच उन लेखकों के लिए एक सुनहरा अवसर है, जो अपने शब्दों के माध्यम से समाज को नयी राह दिखाने का सामर्थ्य रखते हैं। देश के पहले लेखक गाँव के ऐतिहासिक आयोजन में लेखकों और विचारकों ने प्रकृति के सान्निध्य में सृजनात्मक चिंतन की स्वतंत्रता प्राप्त की।

आभार : वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई

बुडापेस्ट में एमीटा शेर-गिल सांस्कृतिक केंद्र के डायस्पोरा बच्चों के लिए हिंदी-कक्षाएँ

बुडापेस्ट में भारतीय दूतावास की सांस्कृतिक शाखा, एमीटा शेर-गिल सांस्कृतिक केंद्र (ASCC) ने घोषणा की कि नवंबर 2024 से स्थानीय भारतीय डायस्पोरा के बच्चों के लिए हिंदी भाषा कक्षाएँ आयोजित की जाएँगी। हिंदी कक्षाओं का आयोजन एमीटा शेर-गिल सांस्कृतिक केंद्र द्वारा किया जाएगा। पंजीकरण और कार्यक्रम-प्रबंधन केंद्र द्वारा प्रकाशित शेड्यूल के अनुसार किया जाएगा। केंद्र नियमित भाषा अभ्यास और ऑनलाइन सहायता सुनिश्चित करेगा तथा शिक्षक और पाठ्य-सामग्री की उपलब्धता पर भी विशेष ध्यान देगा। इस प्रकार, एमीटा शेर-गिल सांस्कृतिक केंद्र की यह पहल हंगरी में रहने वाले भारतीय बच्चों को हिंदी भाषा और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने में एक सकारात्मक और प्रभावशाली कदम है।

साभार : भारतीय महावाणिज्य दूतावास, गुआंगझोउ की आधिकारिक वेबसाइट

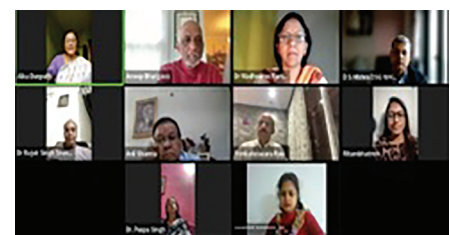
आभासी कार्यक्रम

हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि



5 अक्टूबर, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने 'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 18' विषयक आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। भारतीय विद्यालय अल घुबरा, ओमान की छात्रा आस्था कुमारी ने जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कहानी 'छोटा जादूगर' की विवेचना करते हुए एक बालक का अपनी माता के

प्रति प्रेम का वर्णन किया। ताराश शेर्चेंको कीव राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, यूक्रेन की छात्रा ओल्हा माकारोवा ने अनामिका की कविताएँ तथा गीतांजलि श्री की 'रेत समाधि' की विशेषताओं को प्रस्तुत किया। अजमेर लेखिका मंच, भारत से वंदना उपाध्याय 'वेदांगी' ने बताया कि अभिव्यक्ति वह गुण है, जो हमारे मानसिक अवसाद को समाप्त कर सकता है। ओमान से श्रीमती पूर्णिमा सिंह ने एकांकी तथा कविताओं के माध्यम से छात्रों में हिंदी साहित्य के प्रति रुचि जागृत करने की चर्चा की। यूक्रेन से डॉ. यूरि बोत्वीकिन ने साहित्य पढ़ने से भाषा के समृद्ध होने की बात की। भारत से डॉ. मधु खंडेलवाल ने लेखन के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने में अजमेर लेखिका मंच की भूमिका पर प्रकाश डाला। भारत से शकील अहमद ककवी ने काव्यात्मक शैली में हिंदी साहित्य-शिक्षण पर अपने विचार प्रस्तुत किए। क्षेत्रीय कार्यालय एवं उत्कृष्टता केन्द्र, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के निदेशक, डॉ. राम शंकर ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हिंदी सबको एक साथ लेकर चलने वाली भाषा है। स्वागत-भाषण विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने किया तथा वरिष्ठ सहायक संपादक श्री प्रकाश वीर ने संचालन एवं धन्यवाद-ज्ञापन किया।



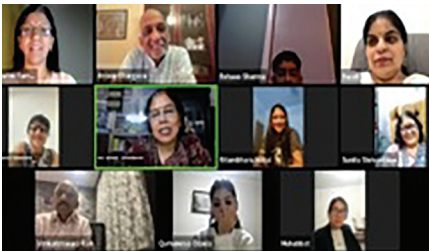
2 नवंबर, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने 'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 19 - आप्रवासी दिवस के संदर्भ में' विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। गयाना की छात्रा वन्या चंदेला ने श्लोक तथा 'जय हिंदी' कविता का सस्वर वाचन कर उसका भावार्थ प्रस्तुत किया।

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के छात्र कृष्णारायण लचा ने मॉरीशसीय साहित्य पर अपने विचार प्रस्तुत किए। हिंदी फ़ाउंडेशन, त्रिनिदाद की छात्रा रिशाह मोहम्मद ने 'हिंदी मेरे लिए क्या है' का वाचन किया। वक्तव्यीय संबोधन में गयाना से रचना चंदेला ने गयाना में शर्तबंद-प्रथा और हिंदी की विभिन्न शैलियों पर अपने विचार व्यक्त किए। मॉरीशस से डॉ. अलका धनपत ने महात्मा गांधी संस्थान में बी.ए. के पाठ्यक्रम के अंतर्गत मॉरीशसीय हिंदी साहित्य की जानकारी दी। रफ़ी होसेन ने त्रिनिदाद में चटनी संगीत तथा त्रिनिदाद के इतिहास के बारे में बताया। भारतीय विद्या भवन के क्षेत्रीय शिक्षा अधिकारी, डॉ. अनिल कुमार शर्मा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में बताया कि हिंदी साहित्य पर आधारित फ़िल्मों एवं धारावाहिकों पर साहित्यिक चर्चा करने से हिंदी साहित्य के प्रति रुचि बढ़ेगी।

(‘हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि’ आभासी कार्यक्रम के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल : [HTTPS://WWW.YOUTUBE.COM/@WORLDHINDISECRETARIAT](https://www.youtube.com/@WORLDHINDISECRETARIAT) पर उपलब्ध हैं।)

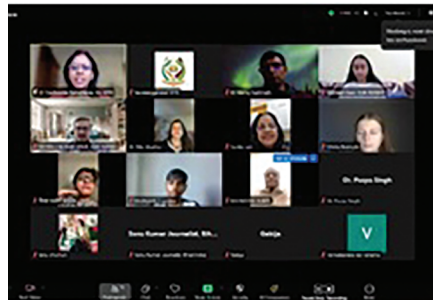
विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी में अभिव्यक्ति



19 अक्टूबर, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने ‘हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 18’ का आयोजन किया। विकास इंटरनेशनल स्कूल, मलेशिया के छात्र रेहास शर्मा ने बुजुर्गों के सम्मान एवं परिवार में उनके महत्त्व को रेखांकित किया। लाल बहादुर शास्त्री स्कूल, उज्बेकिस्तान की छात्रा, कुर्बानोवा ओजोदा ने उज्बेकिस्तान में हिंदी की स्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए। हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ्रीका से यशिका महाराज ने दीपावली के

त्योहार एवं भारतीय संस्कृति पर बात की। मलेशिया से स्वाति रोहिल्ला ने बताया कि वे अपने छात्रों को धीरे-धीरे हिंदी बोलना, अक्षर पहचानना, हिंदी पढ़ना तथा लिखना सिखाती हैं। दजुरायेवा मोहब्बत ने बताया कि उज्बेकिस्तान के ज्यादातर बच्चे हिंदी फ़िल्में देखने के लिए हिंदी सीखते हैं। श्रीमती मालती रामबली ने दक्षिण अफ्रीका में प्राथमिक, विशारद तथा कोविद के स्तरों पर हिंदी की पढ़ाई की जानकारी दी। केंद्रीय हिंदी निदेशालय की सहायक निदेशक, डॉ. नूतन पांडेय ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भाषा-कौशल के विकास के साथ-साथ देश की संस्कृति का विकास होता है। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने सबका स्वागत किया। ‘हिंदी से प्यार है’ संस्था के संस्थापक, श्री अनूप भार्गव ने आभार ज्ञापित किया तथा श्री प्रकाश वीर ने कार्यक्रम का संचालन किया।



21 दिसंबर, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने ‘हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 20’ आभासी कार्यक्रम का आयोजन किया। भारतीय सामुदायिक स्कूल, कुवैत की छात्रा दिश्लीन कौर ने ‘देश की आत्मा है हिंदी’ विषय पर बात की। पितों हिंदी पाठशाला, मॉरीशस से मेधांश जोगेश्वर ने हिंदी पढ़ने के लाभों के बारे में बताया। विलिनयस विश्वविद्यालय, लिथुआनिया से ओरिनता ब्रकनीते ने कहा कि हिंदी सीखने के अवसर का लाभ उठाते हुए उन्हें दो बार भारत की यात्रा करने का मौका मिला। कुवैत से नितिन वड़क्के मड़थिल ने हिंदी-शिक्षण के नए तरीकों तथा उपकरणों पर प्रकाश डाला। मॉरीशस से श्रीमती रेणुका

चमन ने कहा कि हिंदी वर्णों को सिखाने में होने वाली कठिनाई को दूर करने के लिए वे वर्णमाला को स्वरबद्ध करके तथा उन्हें गाकर सुनाती हैं। लिथुआनिया से गाबिया वोसीलूते ने हिंदी पढ़ते हुए व्याकरण तथा शब्दावली पर विशेष ध्यान देने की चर्चा की। अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री रामनयन दुबे ने हिंदी के पाठ्यक्रम में प्रवासी भारतीयों के साहित्य को सम्मिलित करने का सुझाव दिया। स्वागत-भाषण डॉ. माधुरी रामधारी ने दिया। कार्यक्रम का संचालन, अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगठन, नीदरलैंड की अध्यक्षा, डॉ. ऋतु शर्मा ननन पांडे ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने किया।

(‘हिंदी में अभिव्यक्ति’ आभासी कार्यक्रम के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल : [HTTPS://WWW.YOUTUBE.COM/@WORLDHINDISECRETARIAT](https://www.youtube.com/@WORLDHINDISECRETARIAT) पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साक्षात्कार

7 अक्टूबर, 2024 को मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के सहयोग से विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा ‘हमारे देश का एक साहित्यकार’ विषय पर ‘क्षितिज’ रेडियो कार्यक्रम प्रसारित किया गया। कार्यक्रम में मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी लेखक श्री धनराज शम्भु ने बताया कि उन्होंने एक शिक्षक के रूप में 38 वर्षों तक कार्य किया और पर्यवेक्षक के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद वे सरस्वती पाठशाला में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने हिंदी साहित्य-लेखन की शुरुआत कविता से की तथा बाद में गजल पर भी अपनी लेखनी चलाई। इसके अतिरिक्त उन्होंने कहानी, एकांकी तथा बाल-साहित्य भी लिखे हैं। ‘जिंदगी कहाँ से कहाँ तक’ शीर्षक से उनका एक उपन्यास भी प्रकाशित है। श्रीमती अश्विना देवी हेमू ने इस साक्षात्कार के लिए श्री धनराज शम्भु के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

4 नवंबर, 2024 को ‘हिंदी साहित्य एवं कविताएँ’ विषय पर ‘क्षितिज’ कार्यक्रम

प्रसारित किया गया। भारत से पधारी श्रीमती पायल शर्मा कार्यक्रम में अतिथि वक्ता रहीं। उन्होंने छंद-लेखन की चर्चा करते हुए एक छंद का सस्वर वाचन किया। वे पद्य के साथ-साथ गद्य में भी लेखन-कार्य कर रही हैं। उन्होंने लघुकथा के महत्त्व तथा नियमों की चर्चा की तथा 'अँगूठी' शीर्षक से एक लघुकथा भी सुनाई। श्रीमती कल्पना लालजी ने इस साक्षात्कार के लिए श्रीमती पायल शर्मा के प्रति आभार प्रकट किया।

30 दिसंबर, 2024 को 'हिंदी नाटक एवं मंचन' विषय पर 'क्षितिज' कार्यक्रम प्रसारित किया गया, जिसमें 'धूप-छाँव हिंदी नाट्य समूह', न्यू जर्सी, यूएसए की सदस्या ऋतम्भरा मिश्र ने विश्व हिंदी सचिवालय में 'आधे-अधूरे', 'चोंचू नबाब' तथा 'उसने कहा था' नाटकों में अपने अभिनय के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि वे बचपन से ही थिएटर में काम कर रही हैं। नाटक की स्क्रिप्ट को वे बार-बार पढ़ती हैं तथा उसमें आने वाले अल्पविराम तथा विराम पर बहुत काम करती हैं। उनके अनुसार अभिनय में महारत हासिल करने के लिए बोलने की शैली तथा हाव-भाव पर विशेष ध्यान देना चाहिए। श्रीमती अश्विना देवी हेमू ने इस साक्षात्कार के लिए ऋतम्भरा मिश्र को धन्यवाद किया।

(विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों के साक्षात्कार विश्व हिंदी सचिवालय की औपचारिक वेबसाइट [HTTPS://VISHWAHINDI.COM/NEW/#](https://vishwahindi.com/new/#) के 'ओडिओ' भाग पर उपलब्ध है।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लोकार्पण

सेतु प्रकाशन के वार्षिकोत्सव में हुआ पराग मांदले की पुस्तक 'गांधी के बहाने' का लोकार्पण



6 दिसंबर, 2024 को सेतु प्रकाशन समूह

के वार्षिकोत्सव समारोह में पराग मांदले की पुस्तक 'गांधी के बहाने' का लोकार्पण हुआ। इस पुस्तक की पांडुलिपि को 'सेतु पांडुलिपि पुरस्कार योजना-2024' के लिए आई, सौ से भी अधिक पांडुलिपियों में से चुना गया था। इस कार्यक्रम में पुरस्कृत पुस्तक पर परिचर्चा करते हुए अशोक वाजपेयी ने गांधी से दूर होते समाज की विडंबना पर चिंता जताई। ममता कालिया ने कहा, 'गांधी के बहाने' पुस्तक गांधी के नाम पर फैलाये जा रहे असत्य व हिंसा का खंडन करती है। सौरभ वाजपेयी ने कहा कि गांधीवाद आज भी सहिष्णुता और तर्कशीलता की राह दिखाता है। मधुकर उपाध्याय के अनुसार गांधी की आलोचनाओं का जवाब उनकी किताबों में नहीं, बल्कि उनके जीवन में है। तृतीय 'सेतु पांडुलिपि पुरस्कार' से सम्मानित रचनाकार पराग मांदले के अनुसार गांधी का खंडन या समर्थन अप्रासंगिक है, क्योंकि अधिकतर लोग उनके विचारों से प्रेरणा लेते हैं। कार्यक्रम के समापन में अमिताभ राय ने सेतु प्रकाशन की स्थापना से अब तक, पिछले पाँच साल की प्रगति तथा 'सेतु' के उद्देश्यों व प्रतिबद्धताओं के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन स्मिता सिन्हा ने किया।

साभार : प्रभात खबर

लंदन में 'जाने-अनजाने पदचिह्न' कविता-संग्रह का लोकार्पण



10 दिसंबर, 2024 को नेहरू सेंटर, लंदन में श्री मधुरेश मिश्रा की काव्य-पुस्तक 'जाने-अनजाने पदचिह्न' का लोकार्पण हुआ। ऊर्जावान कवि श्री आशीष मिश्रा ने पुस्तक की पृष्ठभूमि और रचनाकार का परिचय देकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

मुख्य अतिथि, पूर्व ब्रिटिश सांसद श्री वीरेंद्र शर्मा ने कहा कि यह पुस्तक मधुरेश जी के व्यक्तित्व से पूरी तरह मेल खाता है। विशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध कवि, कहानीकार और लेखक श्री तेजेंद्र शर्मा ने बताया कि ब्रिटेन में नए रचनाकार बेहतरीन कविताएँ और कहानियाँ लिख रहे हैं, मधुरेश भी उसी श्रेणी में हैं। उन्होंने 'जाने-अनजाने पदचिह्न' से 'एक अजीब-सी लड़ाई' कविता की पंक्तियाँ भी सुनाई।

प्रमुख अतिथि डॉ. नंदिता साहू, अताशे, हिंदी व संस्कृति, भारतीय उच्चायोग ने कहा कि मधुरेश जी का यह कविता-संग्रह उनके सफल प्रयास का प्रमाण है। नंदिता जी ने पुस्तक से 'पलायन विकल्प नहीं' कविता की प्रेरणादायक पंक्तियाँ सुनाईं। वरिष्ठ पत्रकार और पूर्व रेडियो संपादक, बीबीसी हिंदी, डॉ. विजय राणा ने पुस्तक से अपनी प्रिय कविताओं का सजीव पाठ कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

साभार : श्री मधुरेश मिश्रा का फ़ेसबुक पेज

मॉस्को में पुस्तक लोकार्पण और प्रतियोगिताएँ



मॉस्को स्थित भारतीय दूतावास के जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र (JNCC) ने नवंबर-दिसंबर 2024 में हिंदी-संबंधी सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों में हिंदी पुस्तक-लोकार्पण, कविता और निबंध प्रतियोगिताएँ, साहित्यिक चर्चा, हिंदी-पाठ एवं संवाद-सत्र शामिल थे। कार्यक्रम का संचालन जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय दूतावास, मॉस्को ने किया। स्थानीय हिंदी/इंडोलॉजी अध्ययन केंद्र तथा विश्वविद्यालय के लगभग 150 रूसी

छात्रों, विद्वानों और हिंदी शिक्षकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

साभार : भारतीय दूतावास, मास्को, रूस का फ़ेसबुक पेज

नई दिल्ली में 'सियाहत मेरी स्याही से : भारत की तुम से आप तक की यात्रा' का लोकार्पण

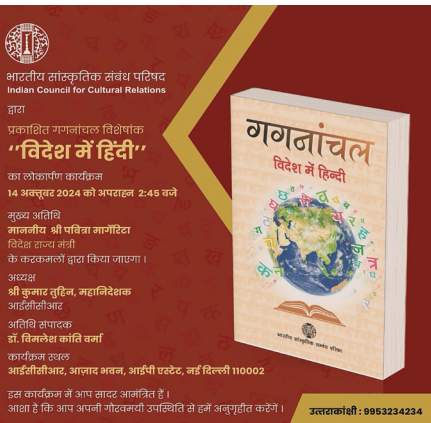


16 दिसंबर, 2024 को सी. डी. देशमुख ऑडिटोरियम, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में श्री अतुल चतुर्वेदी की किताब 'सियाहत मेरी स्याही से : भारत की तुम से

आप तक की यात्रा' का लोकार्पण किया गया। लेखक व राजनीतिज्ञ श्री शशि थरूर, इतिहासकार श्री पुष्पेश पंत, लेखक श्रीमती सुनीता द्विवेदी तथा इतिहासकार श्री हेरम्ब चतुर्वेदी ने एक साथ पुस्तक का विमोचन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री चन्द्रशेखर वर्मा ने किया। पुस्तक में एक नौजवान की कहानी है, जिसने अपने घरेलू व्यापार से हटकर कुछ नया करने का स्वप्न देखा था। यह उस कालखंड की कथा है, जब भारत की अर्थव्यवस्था मुक्त अर्थव्यवस्था के शैशव काल में प्रवेश कर रही थी। यह यात्रा-संस्मरण भारत के हर उस नौजवान की आकांक्षाओं का प्रतीक है, जो आगे बढ़कर अपनी हिम्मत से कुछ नया करना चाहता है।

साभार : लोकभारती प्रकाशन / आमाज़ोन

'विदेशों में हिंदी' का लोकार्पण



14 अक्टूबर, 2024 को भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् ने आज़ाद भवन, आईपी एस्टेट, नई दिल्ली में ऑनलाइन माध्यम से गंगनांचल के विशेषांक 'विदेशों में हिंदी' का लोकार्पण विदेश राज्य मंत्री, माननीय श्री पबित्रा मार्गेरिता के कर-कमलों द्वारा किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आईसीसीआर के महानिदेशक, श्री कुमार तृहिन ने की तथा अतिथि संपादक डॉ. विमलेश कांति वर्मा रहे। यह विशेषांक हिंदी भाषा की अंतरराष्ट्रीय यात्रा और सांस्कृतिक महत्ता को दर्शाता है।

समारोह में भारतीय और विदेशी विद्वानों और लेखकों ने भाग लिया। हिंदी साहित्य, कला और संस्कृति को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करना इस कार्यक्रम की प्रमुख उपलब्धि है।

साभार : आई.सी.सी.आर की आधिकारिक वेबसाइट / फ़ेसबुक पोस्ट

सम्मान एवं पुरस्कार हिंदी में गगन गिल को 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार'

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने हिंदी के लिए प्रतिष्ठित कवयित्री श्रीमती गगन गिल समेत, अंग्रेज़ी व 21 भारतीय भाषाओं के रचनाकारों को वर्ष 2024 का प्रतिष्ठित 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार' देने की घोषणा 18 दिसंबर, 2024 को की। अकादेमी के सचिव श्री के. श्रीनिवास राव ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि श्रीमती गिल को उनके कविता-संग्रह 'मैं जब तक आयी बाहर' के लिए इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।



19 नवंबर, 1959 को दिल्ली में जन्मी श्रीमती गगन गिल ने एक दशक से ज्यादा समय पत्रकारिता को दिया है। उन्होंने टाइम्स ऑफ़ इंडिया समूह व संडे ऑब्ज़र्वर के लिए काम किया है। 1984 में उन्हें 'भारत भूषण पुरस्कार' मिला। उन्होंने अनुवाद के क्षेत्र में भी बहुत काम किया है।

अकादेमी ने फ़िलहाल 21 भाषाओं के लिए पुरस्कारों की घोषणा की है, जिनमें आठ कविता-संग्रह, तीन उपन्यास, दो कहानी-संग्रह, तीन निबंध, तीन साहित्यिक आलोचना, एक नाटक और शोध की एक पुस्तक शामिल हैं। इन पुरस्कारों की अनुशंसा भारतीय भाषाओं की निर्णायक समितियों द्वारा की गई तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक की अध्यक्षता में आयोजित अकादेमी के कार्यकारी मंडल की बैठक में इन्हें अनुमोदित किया गया। विजेता रचनाकारों को एक लाख रुपये की राशि, एक उत्कीर्ण ताम्रफलक और शॉल दिए जाएंगे।

साभार : नवभारत टाइम्स

डॉ. आरती लोकेश गोयल को 'डॉ. संजीव कुमार काव्य-रत्न पुरस्कार'

अंतरराष्ट्रीय विश्व मैत्री मंच, भोपाल द्वारा हाल ही में प्रख्यात कवि एवं साहित्यकार डॉ. संजीव कुमार के सम्मान में 'डॉ. संजीव कुमार काव्य-रत्न पुरस्कार' की स्थापना की गई है। मंच की अध्यक्षा श्रीमती संतोष श्रीवास्तव ने बताया कि डॉ. संजीव कुमार वर्तमान काल के अनुपम एवं अद्भुत पौराणिक कवि हैं। उन्होंने अब तक 19 प्रबंध काव्य सहित विभिन्न विषयों एवं विधाओं पर 286 पुस्तकों की रचना की है। काव्य में 18 प्रबंध काव्य एवं 60 से अधिक काव्य-संग्रह एवं 20 बाल काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने कानून एवं अंग्रेज़ी में भी पुस्तकें लिखी हैं। उनके इस अवदान पर उनको सम्मान देना गौरवपूर्ण हो जाता है। प्रथम 'डॉ. संजीव कुमार काव्य-रत्न पुरस्कार' दुबई निवासी डॉ. आरती लोकेश गोयल को उनकी पुस्तक 'षड्गंधा' के लिए प्रदान किया गया है। यह पुस्तक वैश्विक हिंदी संस्थान ह्यूस्टन के संस्थापक डॉ. ओम प्रकाश गुप्ता को समर्पित है। इसकी भूमिका डॉ. जीतराम भट्ट, निदेशक, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, दिल्ली सरकार द्वारा



लिखी गई है। पुरस्कार के अंतर्गत पुरस्कार राशि, स्मृति चिन्ह तथा प्रशस्ति-पत्र दिए गए।

रिपोर्ट : शकुंतला मित्तल

हिंदी लेखिका सूर्यबाला के उपन्यास ने जीता '34वाँ व्यास सम्मान 2024'



हिंदी लेखिका सूर्यबाला को उनके उपन्यास 'कौन देस को वासी : वेणु की डायरी' के लिए '34वाँ व्यास सम्मान 2024' प्रदान किया

गया। यह उपन्यास 2018 में प्रकाशित हुआ था। 1991 में केके बिड़ला फ़ाउंडेशन द्वारा स्थापित 'व्यास सम्मान' पिछले दशक में प्रकाशित उत्कृष्ट हिंदी साहित्यिक कृतियों को सम्मानित करता है। इसमें रु. 4 लाख की नकद राशि, प्रशस्ति-पत्र और स्मृति-चिह्न प्रदान किए जाते हैं। चयन समिति की अध्यक्षता प्रख्यात साहित्यकार प्रो. रामजी तिवारी ने की।

सूर्यबाला ने अपने लंबे साहित्यिक करियर में 50 से अधिक उपन्यास, जीवनियाँ और बाल-कहानियाँ लिखीं, जिनमें से कई को टेलीविजन धारावाहिकों में रूपांतरित किया गया। 'कौन देस को वासी : वेणु की डायरी' उपन्यास भारतीय युवाओं द्वारा अमेरिका को अवसरों की भूमि मानने की प्रवृत्ति की गहराई से पड़ताल कराता है। इसमें सांस्कृतिक दुविधाओं, वैचारिक संघर्षों और विदेश में महसूस की जाने वाली अलगाव की स्थिति को दर्शाया गया है। यह प्रवासी भारतीयों के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अलगाव को चित्रित करता है, जो अपनी जड़ों से दोबारा जुड़ने में संघर्ष करते हैं और नई पहचान स्थापित करने में विफल रहते हैं। सूर्यबाला ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों और अवलोकनों से प्रेरणा लेते हुए प्रवासी समुदायों के पहचान संकट का यथार्थवादी चित्रण किया है।

साभार : हिंदीकरेंटअफ़ेयर्स - [HTTPS://](https://hindicurrentaffairs.adda247.com/)

[HINDICURRENTAFFAIRS.ADDA247.COM/](https://hindicurrentaffairs.adda247.com/)

[SURYABALAS-NOVEL-WINS34-TI-VYAS-](https://hindicurrentaffairs.adda247.com/)

[SAMMAN2024-/](https://hindicurrentaffairs.adda247.com/)

वर्ष 2025 के लिए साहित्य की विभिन्न विधाओं में 'जयपुर सम्मान'

जयपुर साहित्य संगीति संस्था द्वारा प्रतिवर्ष राष्ट्रीय स्तर पर दिए जाने वाले साहित्यिक सम्मानों की 3 नवंबर, 2024 को घोषणा की गई। संस्था के संयोजक श्री अरविंद कुमारसंभव ने बताया कि इस वर्ष साहित्य की छह विधाओं में सोलह कृतियों को 'जयपुर सम्मान' के लिए चुना गया है। इनके लेखकों को जनवरी 2025 में जयपुर में आयोजित 'जयपुर साहित्य समागम' में अलंकृत किया जाएगा।

वर्ष 2025 के लिए कथेतर साहित्य में 'याद सुहानी गाँव की' - जय भगवान सिंगला, कुरुक्षेत्र, 'समर्पयामि' - डॉ. गरिमा संजय दुबे, इंदौर, 'विवेक और सरोकार' - कुसुमलता सिंह, दिल्ली, 'काव्य में वैदिक कविताएँ' - मुरलीधर चांदनीवाला, रतलाम, 'मन रंगना' - नंदा पांडेय, रांची, 'नदी नीलकंठ नहीं होती' - निर्देश निधि, बुलंदशहर, कहानी में 'ठाकुर का नया कुआँ' - महावीर राजी, आसनसोल, 'राजधानी कब आएगी' - मार्टिन जॉन, पुरुलिया, 'मेरी कहानियाँ' - मीनाक्षी स्वामी, इंदौर, लघुकथा में संयुक्त रूप से 'टूटती मर्यादा - सविता मिश्रा अक्षजा, आगरा व 'उड़न तश्तरी' - नेतराम भारती, नई दिल्ली, उपन्यास में 'देवयानी' - दीप्ति गुप्ता, पुणे, 'इक दास्ताँ' - ललिता विम्पी, भिवानी, 'सांझ का सूरज' - अमृता पांडे, हल्द्वानी, 'आधी दुनिया पूरा आसमान' - ब्रह्मदत्त शर्मा, जगाधरी को चुना गया है।

जयपुर साहित्य संगीति 'विशेष ज्यूरि सम्मान' (कृति अलंकरण-पत्र) कहानी में 'रवानगी' - निशा भास्कर, नई दिल्ली, 'नेविगेटर' - शोभारानी गोयल, जयपुर, 'उम्भिकिशु' - कविता मुखर, जयपुर, 'पत्तल' - मुकेश पोपली, बीकानेर, 'दीवार के पार' - अर्चना त्यागी, जोधपुर, कथेतर में 'भारत की महान नारियाँ' - रत्ना बापुली, लखनऊ, 'वित्त, बैंकिंग एवं भाषा, विविध आयाम' - डॉ. साकेत सहाय, हैदराबाद, उपन्यास में 'बदचलन' - श्वेतकुमार सिन्हा, राजगीर, 'युगांतर' -

डॉ. दिलबाग सिंह विर्क, डबवाली सिरसा, 'मन पाखी तन कारा' - ज्योत्सना कपिल, बरेली, काव्य में 'षड्गंधा' - डॉ. आरती लोकेश, दुबई, यू.ए.ई., 'अनुभूति के पल' - पुरुषोत्तम श्रीवास्तव पुरु, जयपुर, 'मन के रंग हजार' - जीनस कंवर, जयपुर, 'शब्द वीणा' - तारकेश्वरी सुधि, जयपुर तथा 'महाराणा हम्मीर एवं बप्पा रावल बाल साहित्य सम्मान 2024-2025' बाल कहानी एवं बाल गीत के लिए डॉ. राकेश चक्र, मुरादाबाद को दिया जाएगा।

आभार : अरविंद 'कुमारसंभव', संयोजक, जयपुर साहित्य संगीति - नेतराम भारती का फ़ेसबुक पेज

डॉ. विजयानन्द को नीदरलैंड्स का 'वैश्विक साहित्य भूषण सम्मान'

हिंदी यूनिवर्स फ़ाउंडेशन, नीदरलैंड्स ने हिंदी के सुपरिचित साहित्यकार डॉ. विजयानन्द को सर्वोच्च हिंदी सेवी 'वैश्विक साहित्य भूषण सम्मान' से सम्मानित किया है। संस्था की अध्यक्ष प्रोफ़ेसर पुष्पिता अवस्थी ने बताया कि वर्ष 2023 का यह सम्मान उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री, भारत सरकार के तत्कालीन शिक्षा मंत्री एवं साहित्यकार डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' को दिया गया था। इस वर्ष का यह सम्मान डॉ. विजयानन्द की दीर्घकालीन वैश्विक हिंदी सेवा के लिए दिया जा रहा है।

डॉ. विजयानन्द विभिन्न संस्थाओं में सचिव व महामंत्री रहे हैं। हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में उनकी मौलिक, अनूदित व संपादित, कुल 84 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्होंने 'वैश्विक साहित्य' त्रैमासिक का लगभग 10 वर्षों तक संपादन किया है। अमेरिका के 'रामकाव्य पीयूष', 'कृष्णकाव्य पीयूष' सहित, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, जापान, सिंगापुर, मॉरीशस, मलेशिया, फ़िजी आदि अनेक देशों के काव्य-संग्रहों एवं पत्र-पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं।

भारत के कई विश्वविद्यालयों में उनके साहित्य पर एम.फिल व पी.एच.डी. का शोध कार्य हो चुका/चल रहा है। वे अमेरिकन रिसर्च इंस्टीट्यूट के दो बार सलाहकार रहे। भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार सहित, देश-विदेश की अनेक संस्थाओं द्वारा वे सम्मानित हुए हैं। 'अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' पुरस्कार', 'शकुंतला सिरोठिया बाल साहित्य पुरस्कार', 'मोहन राकेश नाटक पुरस्कार', 'बाल साहित्य सम्मान', 'भारतेंदु हरिश्चंद्र सम्मान', 'शिक्षारत्न सम्मान' आदि से उनको विभूषित किया गया है।

सन् 2001 में अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट ने उन्हें अपने रिसर्च बोर्ड का सलाहकार बनाया। वर्तमान में वे वैश्विक हिंदी महासभा के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष हैं।

श्री अमरेंद्र तिवारी की रिपोर्ट (4 नवंबर, 2024)

वर्ष 2024 के वागीश्वरी पुरस्कारों की घोषणा



वर्ष 2024 के वागीश्वरी पुरस्कारों के लिए निर्णायक मण्डल ने अपना निर्णय दे दिया है, जिसके अनुसार कथेतर गद्य के अंतर्गत गीत चतुर्वेदी को उनके संग्रह 'अधूरी चीजों के देवता', नेहा नरुका को उनके कविता-संग्रह 'फटी हथेलियाँ', सारंग उपाध्याय को उनके उपन्यास 'सलाम बॉम्बे व्हाया वर्सोवा डोंगरी' तथा सुभाष पाठक 'जिया' को उनके गजल-संग्रह 'तुम्हीं से जिया है' के लिए 'वागीश्वरी पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। जल्द ही 'सम्मेलन' के वार्षिक अलंकरण एवं सम्मान समारोह में ये पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे।

साभार : अमर उजाला

सूचना

त्रिनिदाद एवं टोबेगो के चयनित विद्यालयों में अब हो सकती है हिंदी की पढ़ाई

16 अक्टूबर, 2024 को पोर्ट ऑफ़ स्पेन, त्रिनिदाद एवं टोबेगो के शिक्षा मंत्रालय ने पत्राचार द्वारा यह सूचना दी कि चयनित प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में हिंदी भाषा पढ़ाने का अनुमोदन दिया जा रहा है। मंत्रालय ने हिंदी निधि फ़ाउंडेशन की इस माँग को औपचारिक स्वीकृति दी।

भारतीय उच्चायोग ने त्रिनिदाद और टोबेगो सरकार के इस फैसले का स्वागत किया और हिंदी निधि फ़ाउंडेशन के सफल प्रयास की खूब सराहना की।

साभार : हिंदी फ़ाउंडेशन का फ़ेसबुक पेज

अंतरराष्ट्रीय हिंदी नाटक-लेखन प्रतियोगिता 2024

विश्व हिंदी सचिवालय ने वर्ष 2024 में 'अंतरराष्ट्रीय हिंदी नाटक-लेखन प्रतियोगिता' का आयोजन किया था। प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार हैं :

भौगोलिक क्षेत्र 1:
अफ्रीका व मध्य पूर्व

प्रथम पुरस्कार
श्री आकाश आर्यनायक - मॉरीशस

द्वितीय पुरस्कार
डॉ. सोमन्त काशीनाथ - मॉरीशस

तृतीय पुरस्कार
श्रीमती सुनीता आर्यनायक - मॉरीशस

Geographical Region 1: Africa & Middle East

भौगोलिक क्षेत्र 3:
एशिया व ऑस्ट्रेलिया

प्रथम पुरस्कार
श्रीमती सुभाषिणी एत. कुमार - फ़िजी

द्वितीय पुरस्कार
श्री रोहित कुमार 'हेप्पी' - न्यूजीलैंड

तृतीय पुरस्कार
डॉ. कौशल किशोर श्रीवास्तव - ऑस्ट्रेलिया

Geographical Region 3: Asia & Australia

भौगोलिक क्षेत्र 5:
भारत

प्रथम पुरस्कार
श्री जय प्रकाश सिंह - उत्तर प्रदेश, भारत

द्वितीय पुरस्कार
छाया प्रभाकर वैलिप - गोआ, भारत

तृतीय पुरस्कार
श्री अश्विनी कुमार - उत्तर प्रदेश, भारत

Geographical Region 5: India

प्रधान संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
संपादक : डॉ. शुभंकर मिश्र
वरिष्ठ सहायक संपादक : श्री प्रकाश वीर
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडियेन्स स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat,
Independence Street, Phoenix 73423,
Mauritius

फ़ोन : (230) 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक : www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/
ट्विटर : @WHSMauritius
इंस्टाग्राम : WHS_08

संपादकीय

विद्यालयों में हिंदी सीखने का अनुकूल वातावरण



हिंदी सीखने के लिए पुस्तकीय ज्ञान के अलावा अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है। वातावरण छात्रों के व्यवहार और उनके सीखने की क्षमता को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। विद्यालय की प्रशासनिक प्रणाली, शिक्षण की रणनीतियाँ और शैक्षिक संसाधन अनुकूल वातावरण बनाने में प्रेरक होते हैं। स्कूलों में बीज-रूपी वातावरण को जैसा खाद, हवा और पानी मिलता है, वैसा ही पढ़ाई का परिणाम होता है। सही वातावरण मिलने पर छात्र का मन हिंदी में रम जाता है और इसे सीखने की इच्छा जागती है। विश्व के कई विद्यालयों में हिंदी सीखने के प्रोत्साहनपूर्ण वातावरण का निर्माण किया जाता है, जो भाषा-अधिग्रहण को सुगम बनाता है।

प्रातःकालीन सभा से स्कूलों में दिन की शुरुआत होती है। मॉरीशस के प्रत्येक विद्यालय में हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, ईसाई आदि समुदायों के बच्चे एक साथ अध्ययन करते हैं। हर समुदाय की अपनी अलग भाषा होती है। मार्के की बात यह है कि भाषाई विविधता के बावजूद कुछ विद्यालयों में सुबह की सभा में सभी बच्चे एक साथ हिंदी में प्रार्थना करते हैं। मॉरीशस के क्यूरिप शहर में स्थित नामी महाविद्यालय 'हिन्दू गल्स कॉलेज' की हिंदी विभागाध्यक्षा श्रीमती साधना जगरनोथ कहती हैं -

“पारंपरिक रूप से हमारे विद्यालय में दैनिक प्रार्थना हिंदी में की जाती है और श्रद्धापूर्वक हमारे हिंदी और अहिंदी भाषी विद्यार्थी इसमें भाग लेते हैं।”

विद्यार्थियों का एक स्वर में हिंदी में प्रार्थना करने से स्कूल का प्रांगण हिंदीमय हो जाता है। भाषा के प्रति सजगता बढ़ती है और उसे सीखने का अनुकूल वातावरण तैयार होता है। सुबह का संदेश और सूचनाएँ भी हिंदी में प्रस्तुत करने की परंपरा कायम रखी जाती है। युगांडा के 'दिल्ली पब्लिक इंटरनेशनल स्कूल' की शिक्षिका श्रीमती रीना गुलेरिया कहती हैं -

“विद्यालय में सुबह की सभा का आयोजन सप्ताह में दो बार होता है, जो पूरी तरह से हिंदी भाषा में होता है। इसमें समाचार, आज का विचार, राष्ट्रीय-गान सब हिंदी में प्रस्तुत किए जाते हैं।”

दिनचर्या के प्रारंभ में जब छात्र हिंदी की ध्वनियों का श्रवण और उच्चारण करने की आदत बना लेते हैं, तब वे आसानी से भाषा से परिचित होते हैं और उसे जानने का प्रयत्न करते हैं।

हिंदी की कक्षा में विद्यार्थियों का स्वागत करने के लिए वातावरण को सँवारा जाता है। कहीं कक्षा की दीवारों को रंग-बिरंगे चित्रों और हिंदी के वर्णों, शब्दों और छोटे-छोटे वाक्यों से सजा दिया जाता है, तो कहीं शिक्षक गीत गाकर और मुस्कुराकर कक्षा में प्रवेश करने वाले छात्रों का स्वागत करते हैं। विशेष सजावट और स्नेहयुक्त स्वागत से वातावरण तनावमुक्त हो जाता है, कक्षा में रौनक आ जाती है, बच्चे सहज हो जाते हैं और वे हिंदी से प्यार करने लगते हैं।

कुछ विद्यालयों में कक्षा के एक कोने में पाठ्य-पुस्तक में चर्चित वस्तुओं को मेज पर रखकर हिंदी में उनके नाम चिपकाए जाते हैं, तो किसी दूसरे कोने में हिंदी की सचित्र पुस्तकें, बाल-पत्रिकाएँ आदि पठन-सामग्रियाँ रखी जाती हैं। इंटरनेट कनेक्शन वाले स्मार्ट टेलीविजन पर हिंदी-शिक्षण की रुचिकर सामग्रियाँ प्रदर्शित की जाती हैं। कक्षा में छात्रों की नज़र जहाँ जाती है, वहाँ उन्हें हिंदी दिखाई देती है। इस जीवंत और प्रेरणादायक वातावरण में हिंदी सीखने का उत्साह बढ़ जाता है।

हिंदी के नित्य प्रयोग से अनुकूल वातावरण का निर्माण होता है। स्कूलों में कक्षा के भीतर और बाहर हिंदी में बोलचाल को बढ़ावा दिया जाता है। 'फ़हाहिल अल-वतानिए इंडियन प्राइवेट स्कूल', कुवैत की हिंदी विभागाध्यक्षा श्रीमती वाणी अग्रवाल का कथन है -

“यह जरूरी नहीं कि छात्रों को कमरे में ही बिठाया जाए। कक्षा से बाहर बगीचे में ले जाकर उनसे प्रकृति के दृश्य - नदी, पहाड़, धरती, तारे, चंद्रमा आदि के बारे में पूछ सकते हैं।”

हिंदी में संचार के उन्मुक्त वातावरण का विस्तार करने से भाषा-कौशल का अभ्यास जारी रहता है और ध्वनि-उच्चारण में सुधार होता है।

विद्यालयों में हिंदी क्लब की भी व्यवस्था की जाती है। हिंदी क्लब में विद्यार्थी अंत्याक्षरी खेलते हैं, चुटकुले सुनाते हैं, पहिलियाँ सुलझाते हैं और हिंदी फ़िल्म देखते हैं। कभी 'कौन बनेगा करोड़पति?' खेलते हैं, तो कभी मिठाइयों की दुकान लगाते हैं और हँसी-मज़ाक में मिठाइयों के नाम लेकर उनके स्वाद का वर्णन करते हैं और उन्हें चखने एवं खरीदने के लिए अपने मित्रों को आमंत्रित करते हैं। कभी पौधों की प्रदर्शनी लगाई जाती है और पौधों के बारे में हिंदी में जानकारी दी जाती है। 'हिंदी संस्थान', श्रीलंका की संस्थापिका श्रीमती अथिला कोटलावल कहती हैं -

“एक छात्र-सभा होती है, उसमें महीने में एक दिन सभी छात्रों को बिठाया जाता है ... कभी छात्र आटा, चावल, दाल, प्याज सब लेकर आते हैं और सब्जी काटते हैं। उसमें कहते हैं - 'बारीक काटो', 'तलो', 'पकाओ'; बच्चे मस्ती के साथ हिंदी बोलने का अभ्यास करते हैं।”

हिंदी क्लब के उमंग-भरे सामाजिक वातावरण का छात्रों पर जादुई प्रभाव पड़ता है। हिंदी को दैनिक जीवन के व्यावहारिक विषयों से जोड़कर छात्र समावेशी दृष्टिकोण से इस भाषा को अपनाते हैं और उसे अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाते हैं।

'हिंदी दिवस', 'विश्व हिंदी दिवस' और त्यौहारों के उपलक्ष्य में विद्यालयों में हिंदी का वातावरण छा जाता है। विशेष कार्यक्रम आयोजित होते हैं, जिनमें कविता-पाठ, कहानी-कथन, नाटक-मंचन, गीत-गायन, नृत्य-संगीत आदि होते हैं। छात्र हिंदी में वाद-विवाद करते हैं, भाषण देते हैं और मंच-संचालन करते हैं। उनके जोश को देखकर 'हिंदी गुरुकुल', स्पेन की अध्यक्षा श्रीमती पूजा अनिल कहती हैं -

“मुझे बहुत ही प्रसन्नता की अनुभूति होती है, जब मेरे विदेशी और स्पेनिश विद्यार्थी हिंदी की गतिविधियों में बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। उनका उत्साह मेरे लिए संजीवनी का काम करता है और मुझे भी दुगुना उत्साह से काम करने का साहस मिलता है।”

विद्यालयों में हिंदी के अनुकूल वातावरण से युवा पीढ़ी का जुड़ना हिंदी की प्रगति का सूचक है।

हिंदी-अध्ययन के अनुभव को मनोहारी बनाने के लिए विद्यालयों में गतिशील और मैत्रीपूर्ण वातावरण तैयार करना अपरिहार्य है। प्रातःकालीन सभा को हिंदीमय बनाने, परंपरागत और आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित हिंदी की कक्षा में प्रवेश करने वाले छात्रों का हार्दिक स्वागत करने, कक्षा के भीतर और बाहर हिंदी के प्रयोग की स्थिति उत्पन्न करने, पाठ्येतर गतिविधियों और अनुभवात्मक कार्यक्रमों का आयोजन करने आदि विविध युक्तियों से हिंदी का सकारात्मक वातावरण निर्मित होता है। इस अनुकूलित वातावरण में छात्रों को हिंदी से व्यापक रूप से परिचित होने का अवसर मिलता है। वे इस भाषा को जीवन में साथ लेकर चलते हैं और हिंदी का संसार बढ़ता है।

- डॉ. माधुरी रामधारी
महासचिव